उष्ट्र सम्बन्धी राजस्थानी लोकोक्तियाँ मुहावरे, शब्द तथा भावार्थ

भाकृअनुप
ICAR

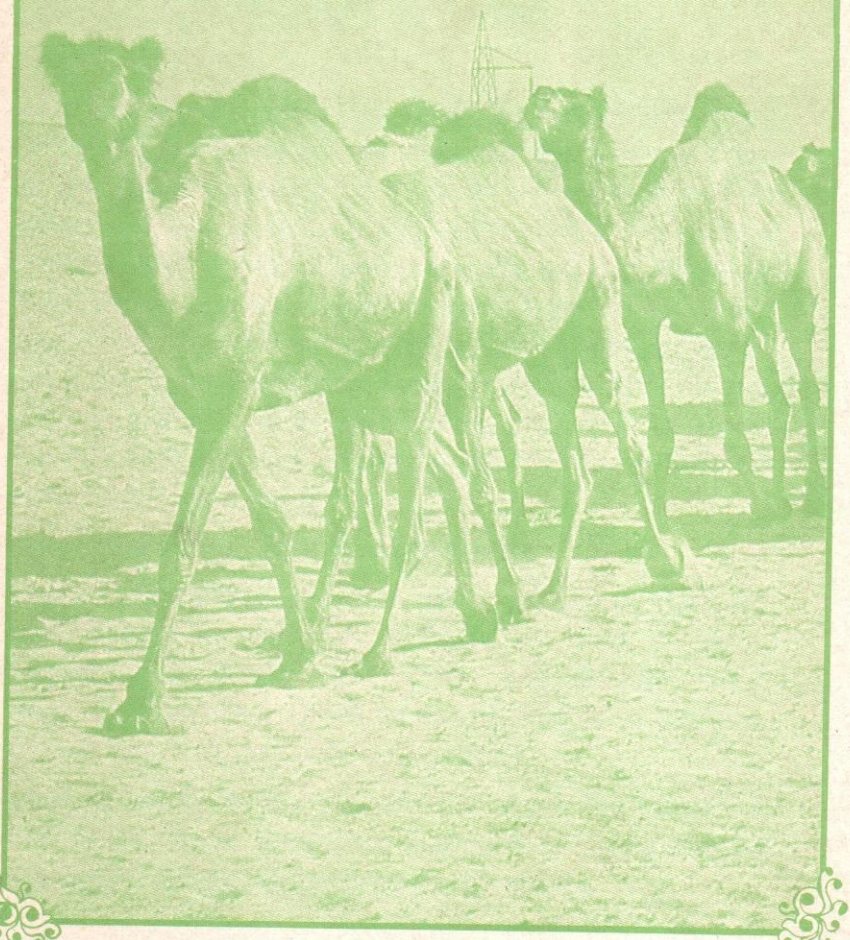

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL • BIKANER •

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़ शिवबाड़ी

बीकानेर

उष्ट्र सम्बन्धी राजस्थानी लोकोक्तियाँ, मुहावरे, शब्द तथा भावार्थ

डॉ. नरेन्द्र दास खन्ना, परियोजना निदेशक

एवं

डॉ. नरेन्द्र शर्मा, पशुधन अधीक्षक

ऊँट की हमारे लिए जो उपयोगिता है वह सर्वविदित है। इसकी पुष्टि हमारे पौराणिक ग्रन्थों, कथाओं, काव्य रचनाओं तथा भाषा ग्रन्थों व आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाली कहावतों व मुहावरों से होती है। ऊँट का वर्णन हमारे प्राचीन ग्रन्थों जैसे मार्कण्डेय पुराण, श्रीमद्भागवत, अमर कोश, आदिकवि वाल्मीकि रचित रामायण व महाकवि कालिदास की रचनाओं में मिलता है जो यह पुष्टि करते हैं कि ऊँट आदिकाल से हमारे लिए एक बहुउपयोगी जानवर रहा है। मरुस्थल व ऊँट ये दो नाम इस प्रकार आपस में जुड़े हैं जैसे नदी व नाव। हमारे देश का 80% मरुस्थलीय भाग राजस्थान प्रदेश में आता है। इस प्रदेश की भाषा राजस्थानी है। इस भाषा में ऊँट के 100 से भी अधिक नाम हैं जो इस पशु की इस प्रान्त में उपयोगिता व यहाँ ऊँट के प्रति लगाव को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। संसार में शायद ही ऐसा कोई अन्य जानवर हो जिसके इतने अधिक नाम किसी एक ही भाषा में हों।

राजस्थानी भाषा में प्रचलित ऊँट के कुछ नाम इस प्रकार हैं :

ओठारू, ऊँट, अलहेरी करहल, करसा, करहौ, कुलनास, कछो, जाखीड़ौ, जकसेस, खण, जमाद, जमीकखूल, वैत, मइयौ, मरुदीप, बारगीर मय, बेहूटो, मदधर, भूरौ, बिडगक, मकड़ाझाड़, भूमिमम, पीड़ाहालू, धधगिर, पणिवास, खणक, कीणनाखतौ, करसलौ, डाचाल, पूटाल, मयंद, पाकूट, काठालक, पागल, टोरडौ, टोरडी, कटक, आखरा तंबर, घघ, सडौ, सयाड़, सरठौ, डगरौ, डायौ, डाची, डाग आदि।

ऊँट के इतने नाम ऊँट की उपयोगिता को तथा राजस्थानी भाषा के वृहद् शब्दकोश को दर्शाते हैं। इसी प्रकार कुछ राजस्थानी भाषा में आम बोलचाल में उपयोग में लिए जाने वाले मुहावरों व लोकोक्तियों का संकलन किया गया है। उदाहरणार्थ :

ऊँट न लेजै दूबळा

बलद न लेजै माता

ऊँचौ खेत नीं चाहीजै

नीचो न कीजै नाता

(ऊँट दुबला नहीं लेना चाहिये

बैल मोटे नहीं लेने चाहिये

ऊँचा खेत अच्छा नहीं होता

तथा नीचा रिश्ता नहीं करना चाहिये।)

लोकोक्तियां तथा मुहावरे ऊँट के उपयोग को तो दर्शाती हैं साथ ही यह भी दर्शाती हैं कि ऊँट मरुस्थलीय जनजीवन का अभिन्न हिस्सा है जो कि यहाँ के निवासियों के दिलों में किस प्रकार से रचा बसा है।

भाषा विचारों को प्रकट करने का माध्यम है। मरुप्रदेश के लोगों का अपनी भाषा में कथाओं, काव्य रचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, लोकगीतों में ऊँट का वर्णन इस बात का द्योतक है कि ऊँट मरुस्थल के जनजीवन का अटूट साथी है। ऐसे मुहावरों व शब्दों का संकलन करने की चेष्टा की गयी है जो आज भी इस मरुप्रदेश के सुदूर ग्रामीण लोगों की आम भाषा में प्रयुक्त होते हैं। राजस्थान की आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाली लोकोक्तियां, मुहावरों व शब्दों का हिन्दी में अनुवाद कर, भावार्थ को प्रकट करने का प्रयास किया गया है।

कुछ उदाहरण प्राचीन ग्रन्थों से जहाँ उष्ट्र के बारे में विवरण दिया गया है, प्रस्तुत हैं :

मार्कण्डेय पुराण के अध्याय 48 श्लोक संख्या 26 में ऊँट की उत्पत्ति ब्रह्माजी के चरण से होनी बतलाई गई है।

पद्म्यांण चाशवान् समातंगान् रासभन् शशकान् मृगन्।
उष्ट्राण् अश्वतरांश्चैव नानरूपांश्च जातयः।।

श्रीमद्भागवत तृतीय स्कन्ध अध्याय 10 श्लोक 21 में सृष्टिवर्णन में ऊँट की उत्पत्ति का विवरण दिया गया है।

गौरजो महिष कृष्णः सूकरो गवयो रूरः।
द्विशफा पशवश्चे मे अविरूष्ट्रश्च सतम्।।

अमर कोश में ऊँट के चार नाम अर्थात् उष्ट्र, क्रमेलक, मय, महांग तथा बच्चे को करभ कहा गया है।

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः
करभः शिशुः करभोः

आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण के कई प्रसंगों में उष्ट्र का विवरण दिया है। बालकाण्डम् सर्ग 5 श्लोक 13 में—

वाजिवारणसम्पूर्णा गोमिरूष्टैः खरैस्तथा ।

अर्थात् घोड़े, हाथी, गाय, ऊंटों तथा गधों की जमघट लगी रहती थी।

अयोध्या काण्डम् सर्ग 70 श्लोक 29 में—

रथान् मण्डलचक्राश्च योजचित्वा परःशतम्।
उष्ट्रगोअश्वखरैर्भृत्या भरतं यान्तमन्वयुः।।

गोल पहिये वाले सैंकड़ों रथों में ऊँट, बैल, घोड़े और खच्चर जोतकर उनके सेवक पीछे-पीछे चले।

सुन्दर काण्डम् सर्ग 17 श्लोक 10 में—

गजोष्ट्रहयपादाश्च निखातशिरसोडपराः ।

उनके पैर ऊँट, घोड़े और हाथी के समान थे।

सुन्दर काण्डम् सर्ग 27 श्लोक 32 में—

उष्ट्रेण कुम्भकर्ण प्रयातो दक्षिणां दिशम् ।

कुम्भकर्ण ऊँट पर सवार होकर दक्षिण दिशा में चला गया।

युद्ध काण्डम् सर्ग 53 श्लोक 5 में—

नागैरश्वैः खरैरूष्ट्रैः संयुक्तः सुसमाहितः
पताकाध्वजविन्नेश्च रथैश्च समलंकृतः

हाथी, घोड़े, खच्चर, ऊँट तथा ध्वजा/पताकाओं (रावड़) से सजे हुए रथ के साथ वह चला।

युद्ध काण्डम् सर्ग 65 श्लोक 35 में—

अनुजामुर्महात्मानं रथिनों रथिनां वरम्
सपैरूष्ट्रैः खरैरश्वैः सिंहद्विपमृगद्विजैः
अनुजग्मुश्चवं घोर कुम्भकर्ण महाबलम्

वे (सेवक) सर्प, ऊँट, गदहे, सिंह, हाथी, मृग और पक्षियों के आकार वाले रथों पर सवार होकर महाबली कुम्भकर्ण के पीछे-पीछे चले।

युद्ध काण्डम् सर्ग 67 श्लोक 15 में—

रथानश्चन् गजानुष्ट्रान् राक्षसानभ्यसूदयन्

राक्षसों के साथ उनके रथों, घोड़ों, हाथियों और ऊँटों का नाश कर रहे थे।

युद्ध काण्डम् सर्ग 73 श्लोक 11 में—

गजस्कन्धगताः केवित् केवित् प्रवखाजिभिः
व्याघ्रवृश्चिकमार्जा रैः खरोष्ट्रैश्चभुजङ्ग

कोई हाथी पर, कोई घोड़े पर, कोई व्याघ्र के आकार वाले रथ पर, कोई बिल्ली, बिच्छू, गधों, ऊँट, सांप पर चढ़कर चला।

युद्ध काण्डम् सर्ग 96 श्लोक 28 में—

अश्वानां षष्टिकोटायुस्तु खरोष्ट्राणां तथैव च
पदातयस्त्वसख्याता जग्मुस्ते राजशासनात्।

साठ करोड़ घोड़े, गधे, ऊँट तथा अनगिनत पैदल सेना राजसेवा के लिए तैयार हो गई।

महाकवि कालिदास ने भी उष्ट्र को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है।

उमया सहितो देवः शंकरः शूलपाणिना
रक्षतु त्वां हि राजेन्द्र टकारो घनगर्जवः

इस श्लोक के प्रत्येक चरण के पहले अक्षर को लेने से उशरट शब्द बनता है तथा श्लोक राजाभोज के दरबार में उस समय रचा गया जब एक अनपढ़ भोले ग्रामवासी ने राजा को 'उशरट गा राया' कहकर आशीर्वाद दे दिया।

वैद्यक में ऊँटनी के दूध को हलका स्वादिष्ट, नमकीन, दीपन, सारक तथा कृमि, कुष्ट, कफ, आनाह, सूजन और उदर रोग के इलाज में उत्तम माना गया है।

औष्ट्र दुग्धं लघुस्वादु लवण दीपन तथा।
कृमिकुष्ठक फानाहशोथोदर हरं सरम्।।

राजस्थान के जनजीवन और लोक साहित्य में तो ऊँट को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। राजस्थान के जनकाव्यों, लोककथाओं तथा लोकगीतों में ऊँट को जगह-जगह स्थान मिला है। ऊँट को धरती का करौत और घर की शोभा माना गया है।

माथा टामक जेहड़ा, बाहूडंड प्रचंड।
दे नाथा वत भीमड़ा, धर करवत घर मंड।।

(डॉ. कन्हैयालाल सहल, राजस्थान के सांस्कृतिक उपाख्यान)

नैणसी री ख्यात

झीणौ करह कंरू कियो, रीणो मंझ करांह
फूलाणी का बेटिया ऊमा हड़ोधराह

बहादर ढाढी की वीरमायण में विवरण है कि बादशाह का वह खजाना जो तीस ऊँटों पर लदा था, लूट लिया गया।

ऊँठां तीसां ऊपरे असरपियां आवै
सो मैली पतसाह रै जोगणपुर जावै

विन्है रासो की इस रचना में ऊँट पर रखकर चलाई या खिंची जाने वाली तोप का वर्णन है जो ऊँट का महत्त्व लड़ाई के समय दर्शाता है।

बागां भरिया लंब ग्रीव बणै
सीसाण सोराण अपार सुणै
सुत्र नालि सुनसय तीन सजै
गोड़ीख कार गजां गरजै

रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत की रचना 'मूमल' में चीखल नाम के ऊँट का विवरण है जो महेन्द्र को रात ही रात में अमरकोट से लुद्रवा तथा सबेरे पुनः अमरकोट पहुँचा देता था।

चीखल री काईं पूछोसा
किरकिरिया कांनांरी
झाबरी पूंछ रो
आरसी इड रो
घोटवी नाली रो
ना ना करतां नागोर जावै
झे झे करतां जैसलमेर पुगावै
घड़ी एक मोहरी ढीली छोडी व्है तो
दिल्ली री खबर पलक में लेतो आवै

चीखल की चाल इतनी बढ़िया थी कि यदि घी का भरा कटोरा लेकर बैठो तो एक बून्द भी नीचे नहीं गिरती थी।

चीखल चालियो जाणै पाणी रो रेलो बहियो
घी रो भरियोड़ो कटोरो हाथ में ले बैठ जावै तो टोपो नीचे नीं पड़े।

प्रसिद्ध लोककथा ढोला-मारू में उत्तम नस्ल के ऐसे ऊँट का वर्णन है जो नागरबेल का खाना खाता था तथा ढोला को नरवर से पूगल आंधी की गति से पहुँचा देता था।

दूजा दौवड़ चौवड़ा, ऊँट कटांला खांण
जिण मुख नागरबेलिया, सो करहो केंकाण

बीकानेर के ऊँट सबसे अच्छे माने जाते हैं :

मारवाड़ नर नीपजै, नारी जैसलमेर।
तुरी तो सिंधी सांतरा, करहल बीकानेर।।
ऊँट मिठाई अस्तरी सोनो गहणो साह।
पांच चीज पिरथी सिरै, वाह बिकाणा वाह।।

अच्छे ऊँट की पहचान भी लोकोक्तियों में खूब कही गयी है।

ओछी गोड़ी नेसकड़ वहै उलळां बग्ग
बो ओठी बो करहलो पाथण होय अलग्ग

चुरू मण्डल के ऊँटों के पारखी चिकित्सक एवं कवि चतुरदान सामौर ने तो ऊँटो के अच्छे-बुरे लक्षण पर कविता रच डाली थी।

नस पतळी पतळी नळ्यां, ओछी मुंह नाळीह।
कोरज छोटी कांनड़ा, हरख चढो हाळीह।।
नहं लाम्बी होवै नळी, पेखो मोटा पींड।
इरकी व्है छोटी अवस, मोड़ज गोड्यां मींड।।
आसण लाम्बो आगलो, थूई मधरी थोग।
सोहरी सफर करावणो, जाकेड़ो मरु जोग।।
सबन डील रंग सुरंगो, जट रेसम रै जोड़।
पतलो ओछो पूंछड़ो, परखो छोटी पोड़।।
खुली बगल ईडर खड़ो, सजल आंख सखरीह।
नहं धापै मन निरखतां, चाल देख मधरीह।।
अबल ऐब अरड़ावणू, खाणू हुवै खराब।
मोली गोडा मारणै, ऊँट तणी व्है आब।।
अड़ै खेजड़ा में खडै, बर बर बैठण बांण।
फिर ज्यावै पाछो फटक, जको आछो जांण।।
आछै ऊँटां री अजब, खास नाचणू खांण।
मन चाया लेबा मुळक, जा जोवो जैसांण।।
घर घर में ऊभा घणा, हुवै न ज्यांरी होड़।
सुथरा पूरा सांपरत, खड़ियाळै रै खोड़।।
आछा डीघा ओपता, बड केंकाणां बाप।
मन चाया ल्यो मोकळा, इळ थळवट मझ आप।।

कोसां री मजलां करै, कर हमेश मन कोड।
पहुँचावै एडै फटक, जंगी पीठज चोड।।
बादळ लाजै बापड़ा, गाजै जद कर गाज।
बाज तणूं चालै न बस, जिण धोरां तूं ज्याझ।।
ऊँट मरूधर आसरो, सखरो देवण साथ।
जिण बल जरमण जीतिया, नौ कूंटी रा नाथ।।
काम घणू देवो कठण, मिनखां देण अराम।
कांई जस थोरो करां, थलवट रा थे थांम।।
असवारी बेल्यां इधक, मान हिये घणमोद।
तीर जिंया छंटै तुरत, असल थली री ओद।।

ऊँटों के पारखी एवं चिकित्सक कवि चतुरदान सामौर ने अच्छे एवं बुरे ऊँट की शारीरिक संरचना व आदतों को कविता रूप में वर्णित किया है। पतली गर्दन, पैर पतले तथा छोटा मुँह हो, कान छोटे हों—ऐसे ऊँट का हाळीह (हल चलाने वाला) गर्वित महसूस करता है।

अच्छे ऊँट की पैरों की नली अधिक लम्बी न हो तथा पुठे मोटे व मजबूत हो, इरकी छोटी हो व पैर बैठने पर अच्छी तरह मुड़ते हों, आगे का आसन लम्बा हो तथा थुई अधिक मोटी व फैली हुई न हो ऐसे गुणों वाला ऊँट मरुस्थल में आराम से सफर कराता है—हृष्ट-पुष्ट शरीर हो व रंग सुन्दर हो, बाल रेशम की तरह मुलायम हो, पूंछ छोटी व पतली हो, पांव छोटे हो, आगे के पैरों का ऊपरी हिस्सा खुला हो तथा ईडर छोटा व खड़ा हो, आंखें नम रहती हो—ऐसे ऊँट की चाल का निरीक्षण करते हुए मन कभी भी नहीं भरता। सबसे खराब आदत अरड़ाने (ऊँट के द्वारा यूं ही आवाज करना, या बिना बात रोना) वाला तथा कटखना ऊँट खराब होता है। गोडे मारने की आदत वाला ऊँट भी निम्न श्रेणी का होता है। जो ऊँट चलते समय बार-बार झाड़ियों व पेड़ों में मुँह मारे व उन्हें छोड़कर हांकने पर भी आगे न चले तथा बार-बार जमीन पर बैठने लगे व जो अपने घर की ओर मुड़ता रहे—इस तरह की आदतों वाला ऊँट अच्छा नहीं होता। नाचना के टोले के ऊँट अत्यधिक प्रसिद्ध थे। अपने मनचाहे अच्छे ऊँट लेने हों तो जेसाणा या नाचना से लो। इन दोनों स्थानों पर अच्छे ऊँटों की कोई कमी नहीं है तथा वहां के ऊँटों का कोई सानी नहीं है। अच्छे सुन्दर डील-डौल के ऊँट खड़ियाला में भी मिलते हैं। बड, केकाणा व बाप नामक स्थानों पर भी भरे पूरे व लम्बे डील-डौल वाले ऊँट मिलते हैं। मनचाहे अधिकतम ऊँट इन मरुस्थल के गाँवों में मिल जावेंगे। यहाँ के ऊँट मीलों का सफर खुशी खुशी करते है। एडी फटकते ही मंजिल तक पहुँचा देते हैं। यहां के ऊँटों की गाज के आगे तो बादलों की गर्जना भी फीकी पड़ जाती है। बाज जैसा तेज उड़ने वाला पक्षी भी मरुस्थल में हार मान लेता है, उस मरुप्रदेश का ऊँट जहाज

कहलाता है। ऊँट मरुस्थल का एकमात्र आसरा या आशा है जो मरुस्थल में पूरा साथ देता है। इन्हीं ऊँटों के बल पर जर्मन फौजों ने अंग्रेजी सेना को हराया था। ये ऊँट अत्यधिक कठिन कार्य करते हैं जिससे मनुष्य को आराम मिलता है। ऊँट की क्या बड़ाई करें ये देवता समान हैं। सवारी करते समय मन प्रफुल्लित व गर्वित हो जाता है। जब ये असली थली (मरुभाग) के ऊँट तीर की गति से चलते हैं।

राजस्थान के गांवों में कहा जाता है कि

ऊँट न लेजै दूबळा

बलद न लेजै माता

ऊँचो खेत नी चाहीजै

नीचो न कीजै नाता

ऊँट दुबला नहीं लेना चाहिये। बैल मोटे नहीं लेने चाहिये। ऊँचा खेत अच्छा नहीं होता तथा नीचा रिश्ता नहीं करना चाहिये।

मालवणी अपने प्रेमी के ऊँट (करहे) को भाई व नागरबेल नरेश कहकर अपने प्रेमी को विदेश न ले जाने की प्रार्थना करती है :

भाई कह बतलावसूं नागरबेल नरेस।

हउ हउ करहा, कुंवर नै मत ले जाय बिदेस।।

अकाल के समय ऊँट व बकरी पशुपालकों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होते हैं। ऊँट तो सूखा ठूंठ खाकर व कम से कम पानी में गुजारा कर लेता है।

काल कुसम्मै ना मरै बामण बकरी ऊँट

बो मांगै, बा फिर चरै, बो सूखा चाबै ठूँठ

अकाल व बुरे समय में ये नहीं मरते हैं—ब्राह्मण, बकरी तथा ऊँट। ब्राह्मण तो मांग कर खा पी लेता है तथा बकरी घूम-फिर कर जो भी मिले अपना पेट भर लेती है व ऊँट सूखे पेड़ों, झाड़ियों को खा पीकर ही अपना गुजारा कर लेता है।

आक के अलावा ऊँट जरूरत पर सब तरह की वनस्पति खा सकता है।

ऊँट छोड़्यो आक अर बकरी छोड़्यो ढाक

राजस्थानी कहावतें तथा इनका भावार्थ

कुछ राजस्थानी कहावतें जिन्हें ऊँट को आधार मान कर कहा गया है व ग्रामवासियों /ग्रामों में प्रचलित हैं तथा उनके भावार्थ सहित यहाँ दिया जा रहा है।

कागलां रै सराप ऊँट कद मरै
(अपना चाहा कब होता है!)

क्यां पर लाया कंचनी, क्यां पर ऊँट पचास
गेणै में ल्याया झालरौ च्यारूं भाई साथ
(कम होते हुए भी ज्यादा दिखावे करना।)

चारौ चरै मींगणां करै, ऊँट को बाणियो कै करै?
(जिसका काम उसी को साजे।)

छानी बुलाई ऊँट चढ आई
(दिखावा करना)

जट खोस्यां किसा ऊँट मरै
(किसी के चाहने से बुरा नहीं होता)

जाट को पंचोल अर सांड को लखाव छानौ कोनी रैवै
(न छिपने वाली बातें)
जान में कुण कुण आया
बींद अर बींद को भाई
खोड़ियौ ऊँट अर काणियौं नाई
(ऐसी सभा जहाँ बहुत कम लोग आये हों।)

गधैड़ै री हुकहकी तौ ऊँट री लुटलुटी
(जैसे को तैसा)

चुस्सै के बिल में ऊँट कद मावै
(सेर के बर्तन में सवा सेर नहीं आता।)

ऊँट बाजै अर बिलोवणौ बाजै धपौड़ी
(अपनी बीन खुद बजाना)

आगम सूझै सांडणी, दोड़ै थका अपार
पग पटकै वैसे नहीं, जद मेह आवणहार
(जब सांड व्याकुल हो पैर पटके व बैठे नहीं तब समझो कि वर्षा आने वाली है।)

ऊँट खोज्या तो मेरी टोपी उतार लई
(कर भला हो बुरा)

ऊँट चढ़ै, ने कुत्तौ खाय
अणहोणी को कै उपाय ?
(होनी पर क्या बस)

ऊँट पर सूं पड़ै, भाड़ैती सूं रसै
(अपनी गलती दूसरों के सिर मंढना)

ऊँट बडौ होवे ज्यूं लारनैं मूतै
(ज्यों-ज्यों मुरगी बड़ी हुई त्यों-त्यों अण्डा छोटा दिया।)

ऊँट मरियो कपड़े के सिर
(किसी का सर किसी की जूती)

बिना मूरी री सांड अर नातैरी रांड न्याल कोनी करै।
(बिना अनुशासन के काम नहीं होता।)

पांवली सांड, नारनोल कौ भाड़ौ
(अपनी चादर से ज्यादा पाँव पसारना)

ऊँट रौ बावळियौ सगौ
(बेतुकी बात)

ऊँट उसा ने पूंछ टुका, ऊँट ऊचै न पूंछ टकै
(ऊँची दूकान फीका पकवान)

पांवली सांड पकवान री भूखी
(जिस लायक न हो उसकी इच्छा करना।)

सौरै ऊँट पर दो चढ़ै
(भोले-भाले का शोषण करना)

हार्‌योड़ो ऊँट धरमसाला कांनी देखै
(थका हुआ पथिक आसरे की ओर तकता है।)

पांवली सांड बनाती कूंची
(बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम, करो बच्चो सलाम)

छोड़्या टोडा टोडड़ी, लांग्या नदी वणास
आडावळौ उलांघियौ, छोड़ घरां की आस
(सब कुछ छोड़ कर परदेश जाना)

ऊबा ऊँट ई कदैई पिलाणीजै ?
(बिना तरीके के काम नहीं होता।)

ऊँट आगैऊं बैसे नै लारे ऊं उठै
(बेतुका व्यवहार)

कदैई तो ऊँट भाखर हेटै ऊँ बेवैला !
(कभी तो सेर को सवा सेर मिलेगा)

बात ऊँट रै लारलै आसण आसी
(बात अपने आप सामने आयेगी।)

ऊँट उठतांई तीन हिलोळा ठोकै
(अपने स्वभाव के अनुरूप काम करना)

बिना मोरी रौ ऊँट
(मनमौजी या असंयमित व्यक्ति)

ऊँट साथलौ कांबलौ
(सोने से घड़ाई महंगी, ऊपर का खर्चा सामान की कीमत से ज्यादा।)

ऊंदी इंदरी ऊँट री स्वारथ सीधी होय
(स्वार्थ सबसे बड़ा होता है)

ऊँट री खोड़ ऊँट ई भुगतै
(जैसी करनी वैसी भरनी)

ऊँट री खोड़ ऊँट ने खाय, ऊँट री खोड ऊँट खौडावै।
(अपनी करनी अपनी भरनी)

ऊँट बाळदौ करणो
(अनमेल जोड़ी)

नगारै रो ऊँट
(ढीठ)

ऊँट मरै धणी रो, गोठ हुवै गिद्धां रै
(किसी के दुःख में किसी का सुख। एक का घाटा दूसरे का लाभ।)

ऊँट रा हाड गलतांई जैज लागै
(ज्यादा धन रफ्ता-रफ्ता समाप्त होता है, कोई चीज़ धीरे-धीरे खत्म होती है।)

पैलांतौ कैर्या कोयनी, ऊँट बे बेलावै
(अपने बिगाड़े हुए काम का दूसरे पर गुस्सा करना)

चांचियौ ऊँट धणी ने खावै
(बेकार चीज रखने से अपना ही नुकसान होता है।)

है कैड़ो—ऊँट रै मींगड़ा जेड़ौ
(बदसूरत)

सायंड रै कान में गूंघलौ
(दिखावे का काम अपने लाभ के लिए)

ऊँट मरै, नै कड़ियौ मिलै
(अपने लाभ के लिए दूसरे के नुकसान का सोचना)

कद ऊँट मरै नै कद कड़ियौ मिलै
(नौ मन तेल होगा तो राधा नाचेगी!)

ऊँट रौ भाकलो सी नीं आडै पण घी ई नीं आडै
(गुण व अवगुण सब में होते हैं।)

सांड रौ दूध नीं जमै नीं जमावै
(जो काम नहीं हो सकता, वह नहीं हो सकता)

थाकोड़ै ऊँट रौ फर्क तरवार रौ काम करै
(दुखी मन की पुकार व चोट दिल छू जाती है।)

कमरी ऊँट व्है यूं
(काँपना)

गागड़ता ऊँट पिलाणीजै
(चाहे बड़बड़ाओ पर काम तो करना होगा)

उज्जड़ गाँव में ऊँट आयो, लोग जाणै परमेश्वर आयौ
(डूबते को तिनके का सहारा)

के कड़ बैठै ऊँट
(आगे-आगे देखिये होता है क्या। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।)

ऊँट री पीठ नीं लदै सो गलै बंधै ऊँट रै चडैनीं सौ मडै
(समय पर काम नहीं करने से नुकसान होता है)

ऊँट री पूंछ सूं ऊँट बंधियौड़ौ
(अपने ही शब्द-जाल में फंसना)

ऊँट रौ पाद धरती रो नीं आसमान रो
(जो किसी काम का न हो)

ऊँट रै वाल्हौ ऊँट सूं ई दिरीजै
(जिसका काम उसी को साजे)

ऊँट रै सागै मिनकी
(कहना कुछ और करना कुछ)

ऊँट रौ मत्तौ सांजी सारू
(अपने मन मरजी का काम करना)

ऊँट रौ रोग रैवारी जाणै
(जेवर का काम तो जौहरी ही जानता है।)

ऊँट लाम्बौ तौ पूंछ छोटी
(कोई न कोई कमी रह जाना। सर्वगुण सम्पन्न कोई नहीं होता।)

ऊँट आळी पकड़
(पक्की पकड़)

ऊँट व्है तो झै झै करां
(साधन हो तो काम करें)

ऊँटा रै कुण छप्पर छाया
(ज्यादा आशा नहीं करनी चाहिए)

ऊँट रै ब्यांव में गधेड़ा गीत गावै
(एक थैली के चट्टे-बट्टे, राम मिलाई जोड़ी, चोर का भाई डकैत)

ऊँट रो हौट कद खिरै अर कद खाईजै
(कब बोये और कब काटे, कब काम शुरू हो और कब खत्म हो)

कागलां रै सराप ऊँट थोड़ाई मरै,
(किसी के बुरा चाहने से बुरा नहीं होता)

काणो ऊँट कंकेड़ां कांनी देखै
(मजबूर नजर)

कूंजड़ै रौ ऊँट मरै अर तेली भद्दर व्है
(दिखावे की सहानुभूति)

कुजडै ऊँट रो पेट भूखौ नीं खैड़ देवै
तौ मौर ई कोरा नी खैड़ दै
(खाना देने के एवज में पूरा काम लेना)

गमियौ ऊँट घड़ै में सोधै
(दूध का जला छाछ को भी फूंककर पीता है)

भांगोड़ौ ऊँट व्है ज्यूं
(काम के बोझ का मारा)

ऊँट कद पिलाणीजैला
(रवानगी कब होगी ?)

ऊँट सारू पाबूजी रौ औवण
(ईश्वर की दया से)

सौ ऊँट अर नव ठूंठ
(अनहोनी स्थिति)

अकल बिना ऊँट उरबाणा फिरै
(बिना बुद्धि के कोई काम नहीं हो सकता/कर सकता)

ऊँट अरड़ावता ई लदै
(बड़बड़ाते हुए काम करना)

अरड़ावै ऊँट, डामीजै गधौ
(करे कोई भरे कोई)

ऊँट किसी कड़ बैठे
(ऊँट किस करवट बैठता है)

ऊँट ऊँट री सूंघ नै रहसी
(अपनी प्रकृति अनुसार)

ऊँट तो कुदैई कोयनी अर बोरो पैलाई कूदण लागौ
(काम होने से पहिले ही विरोध करना)

ऊँट नीं कूदिया बोरा कूदिया
बोरा मांयला छाणा कूदिया
(ज्यादा हेकड़ी मारना, दूसरे के दम पर नाचना)

ऊँट गमजा तौ कमळियौ खोस लीजौ
(छोटी सी गलती पर सजा)

ऊँट घी देतांई अरड़ावै, अर फिटकड़ी देतांई अरड़ावै
(जो अपने लाभ-हानि में फर्क न कर सके वह हर अवस्था में दुखी रहता है।)

ऊँट चढ्यौ भीख मांगै
(अपनी हैसियत से नीचे काम करना)

ऊँट चढिये नै कुत्तौ खाय, अणहोणी को कै उपाय
(होनी को कोई नहीं रोक सकता)

ऊँट चढ्यै नै दो दीसै
(कुर्सी का घमंड)

ऊँट चढ्यौ गुळ खावै
(दिखावा करना)

ऊँट चढ्यै रौ अर डोकरी रौ कांई सांढौ
(अमीरी व गरीबी का क्या मेल)

ऊँट चढ्या सै ऊचकै
(ओहदा मिलने से घमंडी होना)

ऊँट छोड़्यौ आकड़ौ, नै बकरी छोड़्यौ कांकरौ
(अकाल में ऊँट केवल आक व बकरी केवल कंकर छोड़ती है)

ऊँट लादण सू गयौ तो कांई पादण सूं ई गयौ
(जो काम के लायक न हो वह कुछ तो कर सकता है, खोटा सिक्का भी कभी चल जाता है।)

ऊँट डूबै जठै गाडर री कांई थाग
(जहाँ बड़ों की दाल न गले वहाँ छोटे की क्या बिसात)

ऊँट पूंछड़ी सूं माखी नीं उड़ा सकै
(हर किसी में कुछ न कुछ कमी रहती है)

ऊँट बयड़ पावणौ ज्यूं खांचै ज्यूं जाय
(ज्यादा कहने पर उल्टा काम करना)

ऊँट मरियां, कप्पड़ सिर बोझ
(अपना घाटा दूसरे से वसूलना)

ऊँट मरै जद मारवाड़ सामी मूंडौ करै
ऊँट मरै जद आथूंण कानी जोवै
ऊँट मरै जद लंका सामी जोवै
(आखरी समय अपने याद आते है।)

ऊँट मरै जद चींचड़ा ई मरै
(गेहूँ के साथ घुन का पिसना)

ऊँट बळद रौ कांई जोड़ौ
(अनमेल जोड़ी)

ऊँट बिलाई ले गई हांजी हांजी केणौ
(मक्खन लगाना, हाँ में हाँ मिलाना)

ऊँट बेच्यौ कितरै कै लायो जितरै
(सीधा जबाव न देना। जैसा करना वैसा भरना)

ऊँट में सीधापणौ कांई दिसै
वौ तौ मूतै ई टेढौ
(खराब आदमी में अच्छाई कहाँ दिखती है ?)

ऊँट रा गुल्ला स्यालियौ कद खावै
(नासमझी की बातें व्यर्थ ही होती हैं)

ऊँट री कीसी कल सीधी
(कुटिल में अच्छाई नहीं होती है।)

ऊँट री खौड़ ऊँट ई पावै
(अपनी करनी अपनी भरनी)

चांचियौ ऊँट धणी नै खावै
(गलत साथी नुकसानदायक होता है)

ऊँट री लम्बी गावड़ काटण सारू थोड़ी व्है
(ज्यादा धन लुटाने के लिए नहीं होता है।)

ऊँट री लांबी गावड़ कोई दो वेळा वाढीजै
(हथेली पर सरसौ नहीं उगती)

ऊँट गमजा तौ मनै फोट कैदीजौ
(दिखावै के लिए जिम्मेवारी लेना)

ऊँट री चोरी अर छानै मानै
(गलत काम का फल जरूर मिलता है)

ऊँट रै पेट में जीरै रौ बघार
ऊँट री जाड़ में जीरै रौ कांई थाग लागै
ऊँट री जाड़ में जीरै रौ कांई पतौ पड़ै
(बड़ी आवश्यकता के लिए छोटी सी सहायता)

ऊँट रै गलवाणी सूं कांई संदै
(बेकार की मेहनत)

ऊँट नै गुलगुला भावै
(असामान्य इच्छाएं)

भूखौ ऊँट ओडै कांनी दोड़ै
(मरता क्या न करता)

खीजियोड़ौ ऊँट व्है ज्यूं
(चिड़ा हुआ/खीजा हुआ व्यवहार)

ऊँट हर्‌या-हर्‌या मींगणा करै
(पेट में बात नहीं पचना)

नगारा रै ऊँट नै चमकियां पार नीं पड़ै
(ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना)

ऊँट तो नगारां रौ अर कूदै नव-नव ताल
(छोटी सी बात पर परेशान होना)

ढूंगां सूं ऊँट रा पग मांडणा
(अपनी हार मानना)

घर जाये रा दिन गिणू क दांत
(किसी के बारे में पूरी जानकारी)

लोक भाषा में ऊँट से सम्बन्धित शब्दों की सूची व उनका हिन्दी अनुवाद :

अचर—अपच, बदहजमी, न चरना, जहरीला या खराब चारा खाने के कारण।

अणियालौ—अड़ियल बदमाश ऊँट

अदन्त—युवा ऊँट जिसके दाँत न आये हो व उम्र 3 वर्ष से ऊपर हो।

अपलहाणौ—बिना पिलाण कसा ऊँट

अलहैरी—अरब देश का ऊँट

अलाणौ—ऊँट जिस पर सवारी न की गई हो या ऊँट जिस पर सवारी हेतु कभी पिलाण न कसा गया हो।

अलावणौ—ऊँट जो सिर हिलाता रहे

आगलणौ—ऊँट का चारों पांव उठाकर उछलना या कूदना

आड़णौ—ऊँट जिसकी अरड़ाने या चिल्लाने की आदत हो, डर से, दर्द से या यूँ ही।

आठियौ—ऊँट पर बाँधी हुई बन्दूक

आंठू—ऐसा ऊँट जिसके आगे वाले पैर शरीर से रगड़ खाते हों।

आडपिलाण—ऊँट पर सवारी करते समय पिलाण पर दोनों पैर एक तरफ करके बैठना।

आतेलौ—ऊँट पर लदा वजन एक ओर अधिक झुका हो। सन्तुलन खो दे।

आराबा—ऊँट की पीठ पर लादने वाला बोरा या बडा थैला, जो ऊँट के बाल व बकरी के बाल का बना होता है।

आलावणौ—वह ऊँट जो हमेशा दाँत घिसकर बजाता रहे।

ओखद—ऊँट को दी जाने वाली दवा-दारू।

ओड़ियाल—ऊँट के ईडर की व्याधि

ओड़ी—ऊँट के ईडर का रोग

ओछी ढाण—ऊँट की एक खास चाल

ओटीजट—ऊँट के कटे हुए बाल

ओठा—ऊँट का अवाड़ा या ऊस

ओठियौ—ऊँट सवार

ओल—जर

इकलाण—एक ही सवार का ऊँट

इकलासियौ—ऐसा ऊँट जो एक ही सवारी बैठाता है, दो सवारी नहीं बैठाता।

इरकियौ—आगे के पैरों की इरकी बगल से रगड़ खाकर निशान बन जाना।

ईडर—ऊँट की छाती पर पांव जैसा निशान या पैड

ईडरियौ—छाती के पैड की बीमारी

उखडियोड़ौ—ऊँट का गोडे या घुटने में रोग होने के कारण लंगड़ाना

ऊकठौ—पिलाण बांधने या कसने हेतु चमड़े के कस्से

ऊँट कंटाली—एक किस्म की झाड़ी जिसे ऊँट चाव से खाता है।

ऊँट गाडो—ऊँट गाड़ी

ऊँट रा बागर—ऊँट की पूंछ के बाल

कजावा—मुसाफिरी में स्त्रियों के बैठने हेतु पिढेनुमा आसन

कंटाल—कांटे वाली घास

कंटालियौ—वजन लादने हेतु काम में ली जाने वाली काठी

कडैछट—ऊँट का मस्ती में शिश्न पर पूंछ मार कर पीठ पर पेशाब छिड़कना।

कतारियौ—ऊँट को मजदूरी हेतु उपयोग में लेने वाला

कपालोंडी—ऊँट के सिर पर रसौली या गांठ

कवडालौ—कौड़ियों से बनी झालर या माला, ऊँट सजाने हेतु।

कमरी—ऊँट की बीमारी, इसमें ऊँट के बैठते समय पीछे के पैर धूजने/कांपने लगते हैं।

कमडी कसौ—ऊँट जो पीटने पर ही काम दे

कसबी—पिलाण कसने की रस्सी

कांगबाव—ऊँट की एक बीमारी जिसमें ऊँट बार-बार बैठने व उठने लगता है।

कानड़ा—कान

कासलकौ—ऊँट का मस्ती में दांत पीसकर आवाज करना।

कुलचौ—ऊँट जिसके पिछले पैर में मोच आई हो।

कूकडौ—ऊँट के गले का एक रोग जिसमें गले में छाले हो जाते हैं, सांस लेने में परेशानी

होती है तथा ऊँट मर भी जाता है।

कूडियौ—ऊँट के बांधने की मोटी चमड़े की बेल्ट या पट्टा।

कूची—पिलाण या ऊँट की काठी

कूंची—ऊँट का लिंग

कूंची मेलना—ऊँट की सम्भोग क्रिया

कूटणो—आगे के एक पांव को मोड़कर बांधना

कूटियऊ—पैर से बंधा हुआ ऊँट

कूटियौ—पैर मोड़कर बांधा हुआ ऊँट

कोथळी—उवाड़ा ढांकने हेतु कपड़े की थैली

खण—दाढ और आगे के दाँतों के बीच के दाँत

खाडालियौ—जैसलमेर का खास किस्म का ऊँट

खियाल—वह ऊँट जिसके चलते समय घुटने आपस में टकराते हों

खीजणौ—ऊँट का मस्ती में मुंह से आवाज निकालना

खीजियोड़ो—मस्त हुआ नर ऊँट

खोड—खुजली, पांव

खोथ—ऊँट का फफूंद से होने वाला रोग

खोथळौ—ऊँट जिसे फफूंद का रोग लगा हो

गंदौ—ऊँट के बालों से बनी दरी

गलतंग—पिलाण बांधने हेतु गले से बांधने वाली रस्सी

गलतियौ—ऊँट की एक बीमारी जिसमें ऊँट कमजोर होता जाता है, परजीवी प्रकोप।

गाजी—एक विशेष जाति का ऊँट

गांठ उपडण—रसौली या गांठ होना

गाठड़ौ—ऊँट के पेट की बीमारी

गाळ—ऊंट को देने हेतु आधा किलो नमक का घोल

गिरबाड—नकेल

गुराब—ऊँट से खींची जाने वाली रस्सी

गंधलौ/गूंधलौ—वह ऊँट जो शीतकाल में या मस्ती में गुल्ला नहीं निकालता

गोओ/गलसूंड—गुल्ला

गोटीजणी—अपच, बदहजमी जिसमें पेट सख्त हो

गोडा फोड़—वह ऊँट जो बैठते समय अगले पैरों के घुटने जोर से जमीन पर पटकता है।

गोडामार—ऊँट जो रात के समय पैर पटकता रहे

गोडी—ऊँट के अगले पैर को घुटने से मोड़ कर बांधना

गोरबन्द—ऊँट सजाने हेतु गरदन पर डालने का वस्त्र

घमचोल—ऊँट की एक चाल

चांची—नीचे का होठ दबा होने से ऊँट के दांत दिखाई देते हों

चढ्ढीरी—सवारी हेतु सिखाया हुआ ऊँट

चढमी—सवारी के उपयोग में लिया जाने वाला ऊँट

चांपलौ—नीचे का होठ दबा होने से जिस ऊँट के दाँत बाहर दिखाई देते हों

चीबी—ऋतु में सांड का मस्ती में पैर पटकना, ऊँट के बच्चे का खेलना

चारौ—चारा

चसलकतै नेस—ऊँट का मस्ती में दांत बजाना

छठां री हाण—छः दाँत वाला वयस्क ऊँट

छपरी—धूजने वाला ऊँट

छींकी—रस्सी की जाली जो ऊँट के मुंह पर बांधी जाती है ताकि ऊँट काट न सके व अनचाही चीज न खा सके।

जड़ौ—बिना सिखाया ऊँट जो कहे अनुसार काम न करे

जजायल—ऊँट पर रखी जाने वाली लम्बी नाली की बन्दूक

जट—ऊँट के बाल

जूण—पिछले पांव के गोडे के पास का कठोर निशान

झकणौ—ऊँट बैठाने की क्रिया

झबू—ऊँट की खाल से बना घड़े जैसा बर्तन

झड़ौ—ऊँट की पिलाण बांधने के तंग से लटका फुन्दना और फुन्दा

झुरकौ—ऊँट की एक विशेष चाल

झूल—ऊंट सजाने का कपड़ा

झूलण—ऊँट की एक गन्दी आदत जिसमें ऊँट झूमता रहता है

झै—ऊँट बैठाने हेतु बोलने वाला बोल

झोक—ऊँट बांधने की जगह

टसरियौ—एक खास चाल वाला ऊँट

टालौ—ऊँट पर लदा हुआ घास का गट्ठर

टोरना—ऊँट को चलाना या दौड़ाना

टोरडी—मादा बच्चा ऊँट

टोरडौ—नर बच्चा ऊँट

टोवण—ऊँट के नाक में डाली जाने वाली लकड़ी की नकेल

ठूसियौ—ऊँट के श्वसन तन्त्र का रोग जिससे ऊँट को खांसी अधिक आती है।

डगरौ—बूढ़ा बेकार ऊँट

डषियोडौ—ऊँट जिसके सवारी हेतु गद्दी बांधी हो या कसी हो

डाण—ऊँट के सिर के पीछे का वह भाग जहाँ से मद चूता है

डाणण—ऊँट पर बांधने की गद्दी सवारी हेतु

डोल—छोटी उम्र में ऊँट पर सवारी हेतु रस्सी व गद्दी से काठी बनाना

डोलण—ऊँट की एक बुरी आदत जिसमें ऊँट दाएं-बाएं डोलता रहता है।

तंग—चमड़े का पट्टा जो पिलाण बांधने के काम आता है

तबडको—ऊँट का चारो पैरों पर उछलना

तरापणो—ऊँट का उछल कूद करना

तलीकट—ऊँट जिसके बैठी मुद्रा में पिछले पांव की गद्दी दिखाई दे

तांगण—ऊँट के हल जोड़ने के काम आने वाली रस्सी व लकड़ी

तापड़—ऊँट का पिछले पैर से लात मारना

तापौ—चारों पैरों पर उछल कर कूदना दौड़ना

तिसालौ—ऊँट के रक्त में एककोशीय परजीवी से होने वाली बीमारी जिसे त्रिबरसा कहते हैं।

तैखल—ऊँट के एक अगले व उसी ओर के पिछले पैर को रस्सी से आपस में बांध देना ताकि ऊँट अधिक दूर न जाए।

तोडियौ—ऊँट का बढ़ता नर बच्चा

थड़ौ—पिलाण के नीचे लगाने की चमड़े की गद्दी

थुई—ऊँट की पीठ का उभरा चन्द्राकार भाग

थूंरी—मोरी के कंगूरे

दांण—ऊँट के आगे के दोनों पैरों को एक रस्सी से बांधना

दीवड़ा—बकरे की खाल से बनी पानी की सुराही

दुगाल—ऊँट जो दोनों गलाफों से गुल्ला मस्ती में निकाले

धकलौ—आगे का भाग

धाकलौ—पीछे का हिस्सा

नकतोड—ऊँट की नाक नथना/नाक बींधना

नस—गरदन

नाल—दवाई पिलाने हेतु बांस या लोहे की नली

नुखत—ऊँट की मोरी

नेसाल—ऊँट के पिलाण से थड़ों को बांधने की रस्सी

नेसालौ—ऊँट जिसके सारे नेस या चीरने के दाँत निकल आए हो

नैणझर—ऊँट जिसे रतौंधी का रोग हो

नौल—ऊँट के पांव में बांधने की सांकल जिसके ताला भी लगता हो

पखाल—ऊँट द्वारा पानी ढोने के लिए बनी चमड़े की बड़ी थैली

पखाली—पानी लाने के लिए काम में लिया जाने वाला ऊँट

पग—पैर

पगथली—पांव की गद्दी

पड़छ—ऊँट की एक चाल जो कि ढाण से धीमी व चीख से तेज हो

पचसदी—पांच सौ ऊँटों का मालिक

पटैल—गर्दन पर बड़े बाल वाला ऊँट

पटौ—ऊँट की गर्दन का वह भाग जहाँ पर मद स्राव दिखाई देता है

पणछीजणौ—ऊँट के पिछले पैरों में सूजन आना

पलाणणौ—ऊँट पर पिलाण कसना

पलाणियौ—ऊँट को हल से जोड़ने हेतु ऊँट की पीठ पर कसी जाने वाली रस्सी

पाकेटू—पक्की उम्र का ऊँट, बूढ़ा ऊँट

पाखडौ—ऊँट के पिलाण की दोनों ओर की लम्बी लकड़ी

पाखरणौ—ऊँट को सजाकर सवारी हेतु तैयार करना

पाखलणौ—एक आगे का पैर पिछले एक पैर से बांधना

पागडून—रस्सी जो रकाब को पिलाण से लटकाने के काम आती है

पांगल—वयस्क ऊँट

पाचू—रसौली या फोड़ा

पाठौ—पिलाण के डंडे

पाणी—जल

पातड़ी—नाक की हड्डी पर सोजिश आना

पालै—ऊँटनी का गर्मी में आना

पावरी—पिलाण पर पाँव रखने की जगह

पावरी—छोटी-मोटी आवश्यक चीजें रखने की थैली

पांसुभंग—छोटी पसली का ऊँट

पिलाण—ऊँट की काठी

पींड—जांघ

पूंछडो—पूंछ

पोड़—ऊँट के पैर का नीचे का हिस्सा

पोढी—ऊँट के अगले पैर में गांठ होना

पौडी—ऊँट के पैर का निचला हिस्सा

फरड़ौ—ऊँट का पिछले पैर से लात मारना

फरबौ—जल्दी का कार्य

फलीजणौ—सांड के गर्भ ठहरना

फिरत—ऊँट को घुमाना

फिरणौ—सुडौल ऊँट

फिराक—तेज चाल वाला ऊँट

फोग—ऊँट की चोरी

फोगडा—रेगिस्तान में होने वाला पौधा जिसे ऊँट खाता है

बगली—ऊँट जिसके चलते समय अगले पैर छाती से रगड़ खाये

बगस—ऊँट जिसके कानों पर अधिक बाल हो

बंबाल—भद्दा ऊँट

बाग करना—सांड द्वारा टोडिये या मालिक को देख कर जाने वाली आवाज

बियूंमियौ—दो थुई वाला ऊँट

बुग्गी—ऊँट की थुई के ऊपर वाले बाल

बुगदी—वजन ढोने व सवारी हेतु अच्छा ऊँट

बुग्गर—दो थुई वाला ऊँट

बोदलौ—बुढ्ढा ऊँट

भाकलौ—ऊँट के बालों से बना कम्बल

भारपिलाण—भार ढोने के उपयोग में ली जाने वाली पिलाण

भोगरी—ऊँट के चरने की एक किस्म की घास

मईयौ—प्रजनन हेतु नर ऊँट

मटमैलौ—मिट्टी के रंग का

मद—ऊँट के सिर के पीछे से निकलने वाला स्राव

मधरौ—सावधानी व आराम से बैठने वाला ऊँट

मसी—ऊँट के सिर के पीछे से निकलने वाला स्राव

मादंगी—बीमारी

मिनख—मनुष्य

मूतण—ऊँट का शिशन का अग्र भाग

मेढ—ऊँट बांधने का खूंटा

मोटियार ऊँट—जवान नर ऊँट

मोरी—ऊँट की नाक से बांधी जाने वाली रस्सी जो कि उसे वश में करने के काम आती है

मोरौ—ऊँट को वश में करने हेतु मुंह बांधने का रस्सा या चमड़े का

रगटल—पिछले पैर से ऊँट का लंगडाना

रडवी—बुढ्ढा बदसूरत ऊँट

रंदी—पिछले पैर से लंगडाना

रतियोडो—ऊँट के लिंग पर सूजन

रपटक—ऊँट की तेज चाल

रली—पिछले पैर से लंगडाना

रस—जोडों में पानी भरना

राफो—ऊँट के पैर की गद्दी फटना व उसमें सोजिश आना

रिकाब—सवारी के लिए सधा हुआ ऊँट

रूकता—अडियल ऊँट

रैतणो—रेत पर बैठ कर रगड़ते हुए खिसकने वाला ऊँट

रोमचरमी—ऊँट की खाल से बना बर्तन

लखाणी—सम्भोग करवाना

लड़—पतले दस्त आना

लागद—ईडर का पैर से लगाना

लाड़णी—तंग से लटकता रस्सी का फुन्दा

लाद—ऊँट की पीठ पर लदा भार

लादी—ऊँट की पीठ पर बांधा लकड़ी का गट्ठर

लारै—पीछे

लारला—पीछे के

लीलड़—हरा चारा खाने से पतले दस्त आना

लुरियौ—एक खास चाल वाला ऊँट

लूंब—पिलाण के दोनों ओर लटकने वाले फुन्दे

वक्रग्रीव—ऊँट का एक नाम (टेढी गरदन)

वाडलौ—ऊँट आगे के दोनों पैर बांधना ताकि वह दूर न जा सके

वादीवाय—ऊँट की एक बीमारी जिसमें ऊँट अकड़ कर चलता

वारौ—ऊँटों के टोले की बैठने की जगह

वीख—ऊँट की धीमी चाल

सरसी—नर ऊँट की मस्ती

सरडकौ—धीमी चाल का डांट

सलीतौ—ऊँट के बाल का बना बोरा

साड़ियौ—मादा ऊँट का सवार

सांड झोका टपगी—तुरन्त ब्यानी वाली सांड

साज पिलाण—पिलाण व ऊँट सजाने का समान

सारणी—सवारी के लिए ऊँट को प्रशिक्षित करना

साखाण—ऊँट सवार

सालू—ऊँट का तालवा

सिंघोडौ—पिलाण के नीचे लगाने के गद्दे

सिमक—ऊँट के पिछले पैरों का पतला हो जाने का रोग

सुत्तरखाना—ऊँट बांधने का स्थान

सुत्तरनाल—ऊँट पर रखकर चलाने की तोप

सुब्बर—ग्याभिन सांड

सूंडी—ऊँट का मुंह

हर—ज्यादा बोझ से एक तरफ झुकना

हचकी—अपच व न खाना

हाड़ी—पिछले पैरों की हड्डी की बीमारी

हाण—पक्के दाँत जो उम्र बताते हैं ऊँट की

हानौ—पिलाण के अग्र भाग पर लगा कुन्दा

हुंसरडौ—ऊँट जो मोरी खींचने से न रूके

हूबी—पगथली में गांठ या रसौली

हेटै—नीचे

हेटलौ—नीचे वाला

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER